हिन्दी विभाग

जमशेदपुर को-ऑपरेटिव कॉलेज

की त्रैमासिक दीवार पत्रिका

अंक: अप्रैल-जून, 2023

संपादक

संजय सोलोमन

सह-संपादक: **नीतू कुमारी**

पृष्ठ सज्जा: **सिंकू**

युवमानस

नवजन मन की गाथा

महिला सशक्तिकरण

महिला सशक्तिकरण से आशय महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार लाना है। देश में महिलाओं के प्रति अनुदार व्यवहार को खत्म करने के लिए महिला सशक्तिकरण आवश्यक है। महिला सशक्तिकरण में शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं, सुकन्या संवृद्धि योजना, प्रधानमंत्री महिला शक्ति केंद्र, महिला सशक्तिकरण के तहत मुहिम चलाई जा रही है। महिलाओं को पुरुष समाज में बराबरी के अधिकार दिलाने लिए उनमें जागरुकता लाना आवश्यक है। बेहतर समाज के निर्माण हेतु समाज में नारी के एक समान अधिकार व सम्मान प्रदान करना उतना ही जरूरी है, जितना की जीवन के लिए भोजन है। वर्तमान समय में कई भारतीय महिलाएँ महत्त्वपूर्ण राजनैतिक तथा प्रशासनिक पदों पर पदस्थ है, फिर भी सामान्य ग्रामीण महिलाएँ आज भी अपने घरों में रहने के लिए बाध्य है। महिलाओं को अपने अधिकार, आत्मसम्मान और स्वतंत्रता के लिए स्वयं आगे आना होगा। महिलाओं के उत्थान के लिए समाज और शासन को अधिक से अधिक उपाय करना चाहिए।

- निशु कुमारी उपाध्याय (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर-1)

मीरा

प्रीत के गीत संगीत से विश्व को
मोक्ष का मार्ग दिखा गई मीरा ।
प्रेम में ऐसी दीवानी हुई कि
हर बंधन को ठुकरा गई मीरा ।
राणा ने विष पिलाया तो विष को
अमृत सा गटका गई मीरा ।
पीर सही, अपवाद सही, पर
प्रेम को श्रेष्ठ बना गई मीरा ॥ १ ॥

राज तजी, घर द्वार तजी और
बैराग की राह आ गई मीरा ।
जोगिन सा जब भेष बनाया तो
प्रेम रतन धन पा गई मीरा ।
प्रेम का रंग फिर ऐसे चढ़ाया कि
प्रिय के रंग रंगा गई मीरा ।
भेद रहा कुछ भी नहीं शेष कि
श्याम में पूरी समा गई मीरा ॥ २ ॥

- नीतू कुमारी (सनातकोत्तर, सेमेस्टर-1)

संघर्ष

कभी जिंदगी ने मेरी न मानी,
कभी मैंने जिंदगी की न मानी
दौर ये आया कि संघर्ष ही साथ लाया।

जिंदगी कहती रही मेरे साथ चलो,
मैंने हंस कर टाला और कहा
मेरे रास्ते बदल गए हैं,
अब मंजिलें भी वो नही रहीं।

कभी जिंदगी ने मेरे साथ संघर्ष किया,
कभी मैंने जिंदगी के साथ
वक्त की आँधी ऐसी आई,
बदलाव का दौर साथ लाई।

बदले हुए अंजान रास्ते हैं,
इन रास्तों पर अकेले चलना है
लड़खड़ाये कदम जो खुद ही गिरना
और खुद ही संभलना है।
बस यूँ ही अब आगे बढ़ना है,
गिरना और संभलना है।
संघर्ष ही तो जीवन है, जीवन ही तो संघर्ष है।

- रुकमनी कालता (स्नातक, सेमेस्टर-5)

गुरु

हमारी अज्ञानता की गहराई खंगाल लेते हैं।
हमारी नादानियों को समझ नई चाल देते हैं।

लाख चाहे कोई, उप कार चुका नहीं सकता,
मन मे ज्ञान का दीपक जलाकर डाल देते हैं।

दूसरों का जीवन सरल बना, जो खुश रहें,
ईश्वर उन्हें ही गुरु की काया में ढाल देते हैं।

बचपन से माँ-बाप और बड़े होकर शिक्षक,
बस यही हैं जो नेकी कर दरिया में डाल देते हैं।

- आसमी परवीन (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर-1)

संपादकीय

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

प्रिय पाठकों,

हमारी त्रैमासिक पत्रिका 'युवमानस' का यह तीसरा अंक है। इस अंक के लिए रचनाओं का चुनाव मूलतः विषय की विविधता को ध्यान में रख कर किया गया है। यह बहुत अनिवार्य भी है। यदि बाग में एक ही रंग के फूल हों, तो वह बेरंगी नज़र आता है। बाग का सौन्दर्य फूलों के विविध किस्मों, रंगों और सुगंधों से ही तो है।

साथियों, विचारों की विविधता ही ज्ञान विस्तार है। महान ग्रीक दार्शनिक सुकरात ने कहा था कि "मैं जानता हूँ कि मैं कुछ नहीं जानता"। इस उद्धरण का भाव यह है कि यदि आप यह जान लेते हैं कि ज्ञान का विस्तार असीम है तो आप यह भी जान लेते हैं कि आपके पास जो ज्ञान है वह कुछ भी नहीं है। शायद इसीलिए ऋग्वेद में कहा गया है, "आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः" अर्थात हमारे लिए सभी ओर से कल्याणकारी विचार आएं। ज्ञान अनुभव से अर्जित होता है और ज्ञान से विचार उत्पन्न होते हैं। भौगोलिक, सामाजिक और अन्य परिस्थितियों में भिन्नता के कारण सबके अनुभव भिन्न भिन्न हो सकते हैं। अतः यह मानना कि किसी एक मानव जाती विशेष के पास विश्व का समस्त ज्ञान हो सकता है, यह अल्पज्ञता है।

मानव समाज के बेहतर विकास के लिए संबंधित विचारों का समृद्ध होना अत्यन्त अनिवार्य है। किसी स्थापित विचार और उसके विरुद्ध उत्पन्न विचार के परस्पर द्वन्द्व से जो नया विचार उत्पन्न होता है वह अधिक समृद्ध होता है। यह समृद्ध विचार ही समाज को नई दिशा दिखाता है। इस द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया में सम्मिलित विचारों की विविधता जितनी अधिक होगी, नया विचार उतना ही समृद्ध होगा। अतः समाज का विकास सही दिशा में हो, इसके लिए विश्व भर के विविध विचारों को जानना और समझना आवश्यक है।

जिस प्रकार ठहरा हुआ पानी दूषित हो जाता है, पेय नहीं रहता, उसी प्रकार सदियों से एक ही विचार पर रूढ रहने से वह विचार विकारी हो जाता है। किसी विचार की उत्पत्ति दौर विशेष के भौतिक स्थिति के संदर्भ में होती है, युग में परिवर्तन के साथ विचारों में भी संसोधन अनिवार्य होता है। ऐसा न होने से युग आगे निकाल जाता है और विचार परंपरा बन कर मानव को जकड़ लेता है और आगे बढ़ने नहीं देता।

नवजन को चाहिए कि वे अपने ज्ञान में विस्तार करें। जहां से भी विचारों का आगमन हो, उनका स्वागत करें । किसी विचार को बस इसलिए नहीं माने कि वह उन्हें विरासत में मिला है या उनपर जन्म से थोप दिया गया है। उन्हें चाहिए कि वे विविध विचारों का अपने स्वानुभूत विचारों के साथ अन्तर्द्वन्द्व करें और अपना मार्ग स्वयं तलाश करें।

- संजय सोलोमन (स्नातक, सेमेस्टर-5)

मेहनत का सबक

एक किसान था। उसके चार बेटे थें। वे आलसी थें। किसान की यह समस्या थी कि उसके बेटे काम नहीं करते थें। किसान चहता था कि उसके आलसी बेटे खेत में काम करें। एक बार उसने अपने बेटों को मेहनत का सबक सिखाने का निश्चय किया। वह अपने बेटे से कहता है कि मैंने पूँजी इस खेत में गाड़ दिया है। तुम लोग जाकर गड़ा हुआ धन निकाल लो। किसान के आलसी बेटे खेत मे चले गए और पूरे ज़मीन को खोद दिया लेकिन उसमें से कोई धन नही निकला।
किसान अपने बेटे को बुलाकर कहता है कि अब जब तुम लोगों ने जमीन खोद दी है, तो उसमें बीज बो दो। वह बड़ा हो कर फसल बन जाएगा और तुम्हें मेहनत का फल धन के रूप में मिलेगा। इस तरह से किसान की समस्या दूर हुई और उसके बेटों को सबक मिल गया कि मेहनत करने से ही सब कुछ मिलता है।

- अनुराधा कुमारी (स्नातक, सेमेस्टर-5)

क्यों न आए पापा ?

चारो तरफ उजाला पर अंधेरी रात थी
जब वो हुआ शहीद उन दिनों की बात थी
आंगन में बैठा बेटा माँ से पूछो बार बार
दीपावली पे क्यूँ न आए पापा अबकी बार

माँ क्यों न तू ने आज भी बिन्दिया लगाई है
है दोनों हाथ खाली न मेंहदी रचाई है
बिछुआ भी नहीं पाँव में बिखरे से बाल हैं
लगती थी कितनी प्यारी अब ये कैसा हाल है
कुमकुम के बिना सुना सा लगता है श्रृंगार
दीपावली पे क्यों ना आए पापा की बार

किसी के पापा उसको नए कपड़े लाए हैं
मिठाइयां और साथ में पटाखे लाए हैं
अब वो भी नए शूज़ पहन खेलने आया
पापा-पापा कहकर सब ने मुझ को चिढ़ाया
अब तो बता दो क्यों है सूना आंगन घर द्वार
दीपावली पे क्यों न आए पापा अबकी बार

दो दिन हुए हैं तू ने कहानी न सुनाई
हर बार की तरह न तू ने खीर बनाई
आने दो पापा को मैं सारी बात कहूंगा
तुझसे न बोलूँगा न तुम्हारी मैं सुनूंगा
ऐसा क्या हुआ कि बताने से है इनकार
दीपावली पे क्यों न आए पापा आपकी बार

पूछ ही रहा था बेटा जिस पिता के लिए
जुड़ने लगी थी लड़कियां उसी चिता के लिए
पूछते-पूछते वह हो गया निराश
जब आँगन में आई उसके पिता की लाश

मन है उदास क्यों मुझे जवाब मिल गया
मकसद मिल गया व जीने का ख्वाब मिल गया
पापा का जो काम रह गया है अधूरा
लड़कर देश के लिए करूँगा मैं पूरा
आशीर्वाद दो मुकाम पूरा हो इस बार
दीपावली पे क्यों न आए पापा अबकी बार

- अनामिका अंबर जैन, प्रसिद्ध कवियित्री

पेड़ लगाएँ

आओ मिलकर पेड़ लगायें,
एक दो नहीं सौ पेड़ लगायें।
यह हमारा लक्ष्य हैं अपना
जीवन में सुखी रहने का सपना।
प्रकृति ने हमारे लिए क्या नहीं किया,
इस जग को जीवन का वरदान दिया,
पर्वत बनकर किया संरक्षण
मुसीबत में निडर रहने का प्रण।
सागर का लहराता सरगम
मन में भरता नई उमंग।
पवन कुमार ने दी मंद-मंद समीर
जहाँ खुशियों की दौड़ पड़ी लहर।
काले बादल की घटा घनघोर
नाच उठे वन के सब मोर।
बरस पड़े उमड़ - घुमड़ नीर,
झूम उठे जग के सारे नारी-नर ।
आओ सब मिलकर प्रकृति का ऋण चुकायें
एक दो नहीं हम सौं पेड़ लगायें।

- रानी सरदार (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर-1)

अंक: अप्रैल-जून | संपादक : संजय सोलोमन | सह-संपादक : नीति कुमारी | पृष्ठ सज्जा : सिंकू

प्रकाशक: छात्र समूह, हिन्दी विभाग, जमशेदपुर को–ऑपरेटिव कॉलेज

संपादकीय

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

प्रिय पाठकों,

हमारी त्रैमासिक पत्रिका 'युवमानस' का यह तीसरा अंक है। इस अंक के लिए रचनाओं का चुनाव मूलतः विषय की विविधता को ध्यान में रख कर किया गया है। यह बहुत अनिवार्य भी है। यदि बाग में एक ही रंग के फूल हों, तो वह बेरंगी नज़र आता है। बाग का सौन्दर्य फूलों के विविध किस्मों, रंगों और सुगंधों से ही तो है।

साथियों, विचारों की विविधता ही ज्ञान विस्तार है। महान ग्रीक दार्शनिक सुकरात ने कहा था कि "मैं जानता हूँ कि मैं कुछ नहीं जानता"। इस उद्धरण का भाव यह है कि यदि आप यह जान लेते हैं कि ज्ञान का विस्तार असीम है तो आप यह भी जान लेते हैं कि आपके पास जो ज्ञान है वह कुछ भी नहीं है। शायद इसीलिए ऋग्वेद में कहा गया है, "आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः" अर्थात हमारे लिए सभी ओर से कल्याणकारी विचार आएं। ज्ञान अनुभव से अर्जित होता है और ज्ञान से विचार उत्पन्न होते हैं। भौगोलिक, सामाजिक और अन्य परिस्थितियों में भिन्नता के कारण सबके अनुभव भिन्न भिन्न हो सकते हैं। अतः यह मानना कि किसी एक मानव जाती विशेष के पास विश्व का समस्त ज्ञान हो सकता है, यह अल्पज्ञता है।

मानव समाज के बेहतर विकास के लिए संबंधित विचारों का समृद्ध होना अत्यन्त अनिवार्य है। किसी स्थापित विचार और उसके विरुद्ध उत्पन्न विचार के परस्पर द्वन्द्व से जो नया विचार उत्पन्न होता है वह अधिक समृद्ध होता है। यह समृद्ध विचार ही समाज को नई दिशा दिखाता है। इस द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया में सम्मिलित विचारों की विविधता जितनी अधिक होगी, नया विचार उतना ही समृद्ध होगा। अतः समाज का विकास सही दिशा में हो, इसके लिए विश्व भर के विविध विचारों को जानना और समझना आवश्यक है।

जिस प्रकार ठहरा हुआ पानी दूषित हो जाता है, पेय नहीं रहता, उसी प्रकार सदियों से एक ही विचार पर रूढ रहने से वह विचार विकारी हो जाता है। किसी विचार की उत्पत्ति दौर विशेष के भौतिक स्थिति के संदर्भ में होती है, युग में परिवर्तन के साथ विचारों में भी संसोधन अनिवार्य होता है। ऐसा न होने से युग आगे निकाल जाता है और विचार परंपरा बन कर मानव को जकड़ लेता है और आगे बढ़ने नहीं देता।

नवजन को चाहिए कि वे अपने ज्ञान में विस्तार करें। जहां से भी विचारों का आगमन हो, उनका स्वागत करें । किसी विचार को बस इसलिए नहीं माने कि वह उन्हें विरासत में मिला है या उनपर जन्म से थोप दिया गया है। उन्हें चाहिए कि वे विविध विचारों का अपने स्वानुभूत विचारों के साथ अन्तर्द्वन्द्व करें और अपना मार्ग स्वयं तलाश करें।

- संजय सोलोमन (स्नातक, सेमेस्टर-5)

महिला सशक्तिकरण

महिला सशक्तिकरण से आशय महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार लाना है। देश में महिलाओं के प्रति अनुदार व्यवहार को खत्म करने के लिए महिला सशक्तिकरण आवश्यक है। महिला सशक्तिकरण में शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं, सुकन्या संवृद्धि योजना, प्रधानमंत्री महिला शक्ति केंद्र, महिला सशक्तिकरण के तहत मुहिम चलाई जा रही है। महिलाओं को पुरुष समाज में बराबरी के अधिकार दिलाने लिए उनमें जागरुकता लाना आवश्यक है। बेहतर समाज के निर्माण हेतु समाज में नारी के एक समान अधिकार व सम्मान प्रदान करना उतना ही जरूरी है, जितना की जीवन के लिए भोजन है। वर्तमान समय में कई भारतीय महिलाएँ महत्त्वपूर्ण राजनैतिक तथा प्रशासनिक पदों पर पदस्थ है, फिर भी सामान्य ग्रामीण महिलाएँ आज भी अपने घरों में रहने के लिए बाध्य है।

महिलाओं को अपने अधिकार, आत्मसम्मान और स्वतंत्रता के लिए स्वयं आगे आना होगा। महिलाओं के उत्थान के लिए समाज और शासन को अधिक से अधिक उपाय करना चाहिए।

- निशु कुमारी उपाध्याय (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर-1)

गुरु

हमारी अज्ञानता की गहराई खंगाल लेते हैं।
हमारी नादानियों को समझ नई चाल देते हैं।
लाख चाहे कोई, उप कार चुका नहीं सकता,
मन मे ज्ञान का दीपक जलाकर डाल देते हैं।
दूसरों का जीवन सरल बना, जो खुश रहें,
ईश्वर उन्हें ही गुरु की काया में ढाल देते हैं।
बचपन से माँ-बाप और बड़े होकर शिक्षक,
बस यही हैं जो नेकी कर दरिया में डाल देते हैं।

- आसमी परवीन (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर-1)

संघर्ष

कभी जिंदगी ने मेरी न मानी,
कभी मैंने जिंदगी की न मानी
दौर ये आया कि संघर्ष ही साथ लाया।

जिंदगी कहती रही मेरे साथ चलो,
मैंने हंस कर टाला और कहा
मेरे रास्ते बदल गए हैं,
अब मंजिलें भी वो नही रहीं।

कभी जिंदगी ने मेरे साथ संघर्ष किया,
कभी मैंने जिंदगी के साथ
वक्त की आँधी ऐसी आई,
बदलाव का दौर साथ लाई।

बदले हुए अंजान रास्ते हैं,
इन रास्तों पर अकेले चलना है
लड़खड़ाये कदम जो खुद ही गिरना
और खुद ही संभलना है।
बस यूँ ही अब आगे बढ़ना है,
गिरना और संभलना है।
संघर्ष ही तो जीवन है, जीवन ही तो संघर्ष है।

- रुकमनी कालता (स्नातक, सेमेस्टर-5)

मीरा

प्रीत के गीत संगीत से विश्व को, मोक्ष का मार्ग दिखा गई मीरा ।
प्रेम में ऐसी दीवानी हुई कि, हर बंधन को ठुकरा गई मीरा ।
राणा ने विष पिलाया तो विष को, अमृत सा गटका गई मीरा ।
पीर सही, अपवाद सही, पर, प्रेम को श्रेष्ठ बना गई मीरा ॥ १ ॥

राज तजी, घर द्वार तजी और, बैराग की राह आ गई मीरा ।
जोगिन सा जब भेष बनाया तो, प्रेम रतन धन पा गई मीरा ।
प्रेम का रंग फिर ऐसे चढ़ाया कि, प्रिय के रंग रंगा गई मीरा ।
भेद रहा कुछ भी नहीं शेष कि, श्याम में पूरी समा गई मीरा ॥ २ ॥

- नीतू कुमारी (सनातकोत्तर, सेमेस्टर-1)

मेहनत का सबक

एक किसान था। उसके चार बेटे थें। वे आलसी थें। किसान की यह समस्या थी कि उसके बेटे काम नहीं करते थें। किसान चहता था कि उसके आलसी बेटे खेत में काम करें। एक बार उसने अपने बेटों को मेहनत का सबक सिखाने का निश्चय किया। वह अपने बेटे से कहता है कि मैंने पूँजी इस खेत में गाड़ दिया है। तुम लोग जाकर गड़ा हुआ धन निकाल लो। किसान के आलसी बेटे खेत मे चले गए और पूरे ज़मीन को खोद दिया लेकिन उसमें से कोई धन नही निकला।

किसान अपने बेटे को बुलाकर कहता है कि अब जब तुम लोगों ने जमीन खोद दी है, तो उसमें बीज बो दो। वह बड़ा हो कर फसल बन जाएगा और तुम्हें मेहनत का फल धन के रूप में मिलेगा। इस तरह से किसान की समस्या दूर हुई और उसके बेटों को सबक मिल गया कि मेहनत करने से ही सब कुछ मिलता है।

- अनुराधा कुमारी (स्नातक, सेमेस्टर-5)

क्यों न आए पापा ?

चारो तरफ उजाला पर अंधेरी रात थी
जब वो हुआ शहीद उन दिनों की बात थी
आंगन में बैठा बेटा माँ से पूछो बार बार
दीपावली पे क्यूँ न आए पापा अबकी बार

माँ क्यों न तू ने आज भी बिन्दिया लगाई है
है दोनों हाथ खाली न मेंहदी रचाई है
बिछुआ भी नहीं पाँव में बिखरे से बाल हैं
लगती थी कितनी प्यारी अब ये कैसा हाल है
कुमकुम के बिना सुना सा लगता है श्रृंगार
दीपावली पे क्यों ना आए पापा की बार

किसी के पापा उसको नए कपड़े लाए हैं
मिठाइयां और साथ में पटाखे लाए हैं
अब वो भी नए शूज़ पहन खेलने आया
पापा-पापा कहकर सब ने मुझ को चिढ़ाया
अब तो बता दो क्यों है सूना आंगन घर द्वार
दीपावली पे क्यों न आए पापा अबकी बार

दो दिन हुए हैं तू ने कहानी न सुनाई
हर बार की तरह न तू ने खीर बनाई
आने दो पापा को मैं सारी बात कहूंगा
तुझसे न बोलूँगा न तुम्हारी मैं सुनूंगा
ऐसा क्या हुआ कि बताने से है इनकार
दीपावली पे क्यों न आए पापा आपकी बार

पूछ ही रहा था बेटा जिस पिता के लिए
जुड़ने लगी थी लड़कियां उसी चिता के लिए
पूछते-पूछते वह हो गया निराश
जब आँगन में आई उसके पिता की लाश

मन है उदास क्यों मुझे जवाब मिल गया
मकसद मिल गया व जीने का ख्वाब मिल गया
पापा का जो काम रह गया है अधूरा
लड़कर देश के लिए करूँगा मैं पूरा
आशीर्वाद दो मुकाम पूरा हो इस बार
दीपावली पे क्यों न आए पापा अबकी बार

- अनामिका अंबर जैन, प्रसिद्ध कवियित्री

पेड़ लगाएँ

आओ मिलकर पेड़ लगायें,
एक दो नहीं सौ पेड़ लगायें।
यह हमारा लक्ष्य हैं अपना
जीवन में सुखी रहने का सपना।
प्रकृति ने हमारे लिए क्या नहीं किया,
इस जग को जीवन का वरदान दिया,
पर्वत बनकर किया संरक्षण
मुसीबत में निडर रहने का प्रण।
सागर का लहराता सरगम
मन में भरता नई उमंग।
पवन कुमार ने दी मंद-मंद समीर
जहाँ खुशियों की दौड़ पड़ी लहर।
काले बादल की घटा घनघोर
नाच उठे वन के सब मोर।
बरस पड़े उमड़ - घुमड़ नीर,
झूम उठे जग के सारे नारी-नर ।
आओ सब मिलकर प्रकृति का ऋण चुकायें
एक दो नहीं हम सौं पेड़ लगायें।

- रानी सरदार (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर-1)